11.07.2020:

बी० ए०- खण्ड-II
अर्थशास्त्र (सम्मान)
भारतीय अर्थशास्त्र (तृतीय पत्र)
Agriculture (Low Productivity)

डॉ. विपिन कुमार, प्रोफ़ेसर
अर्थशास्त्र विभाग,
आर०आर०एस० कॉलेज, मोकामा
पी०पी०यू० पटना २०

APRIL 2020
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19
20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30
M T W T F S S M T W T F S S M T W T F S S
25 MARCH - WEDNESDAY
Appointments
085-281 • WK-13

प्रश्न : कृषि उत्पादकता क्या है ? भारत में कृषि के कम उत्पादकता के कारणों को स्पष्ट करें ? इसके सुधार के उपाय बतावें ?

उत्तर : उत्पादकता कृषि उत्पादन के दक्षता की औसत माप है। उत्पादन प्रक्रिया में आउटपुट और इनपुट के अनुपात को उत्पादकता कहा जा सकता है। संपूर्ण उत्पादकता वस्तुओं एवं सेवाओं के रूप में उत्पाद तथा संपत्ति के उत्पादन और उत्पादन की प्रक्रिया में प्रयोग किये गये साधनों की लागत के बीच अनुपात का द्योतक है। उत्पादन के अन्तर्गत उन सभी वस्तुओं एवं सेवाओं को सम्मिलित किया जाता है- जिनके अंतर्गत न केवल औद्योगीकरण एवं कृषि संबंधी उत्पाद पदार्थ सम्मिलित हैं-- बल्कि शिक्षकों, चिकित्सकों, कार्यालयों, दुकानों, परिवहन संस्थानों तथा अन्य सेवा उद्योगों में कार्यरत व्यक्तियों को भी सम्मिलित किया जाता है। लागत से हमारा तात्पर्य उत्पाद में सम्मिलित सभी प्रकार के प्रयासों अर्थात प्रबन्धकों, शिल्पियों एवं श्रमिकों के कार्य से है। उत्पादकता की अवधारणा को निम्नलिखित सूत्र से भी स्पष्ट किया जा सकता है :

$$\text{उत्पादकता} = \frac{\text{सभी प्रकार का उत्पादन}}{\text{सभी प्रकार की लागत}}$$

हमारे देश में कृषि क्षेत्र में कम कृषि उत्पादकता के निम्नलिखित प्रमुख कारण चिन्हित किये गये हैं :

(1) प्राकृतिक और सामान्य कारण :
(i) भूमि की तुलना में अधिक जनसंख्या. (iv) चकबन्दी व्यवस्था का अभाव
(ii) भूमि का विखण्डन (जोतों का छोटा आकार)
(iii) आबादी का बढ़ता उपविभाजन

(2) ~~मिट्टी की~~ प्राकृतिक कारण :
(i) सिंचाई का अभाव (60-70% असिंचित भूमि) (iii) मिट्टी की जाँच नहीं
(iv) HYV बीजों की कमी
(v) आधुनिक तकनीक का अभाव
(ii) मौनसून पर आधारित खेती : बाढ़, सूखा, अतिवृष्टि, अनावृष्टि.

(3) प्राकृतिक आपदाएँ : (i) तूफान, ठंड, गर्मी, कीड़ों, चूहों, जंगली जानवरों का प्रकोप

(4) मिट्टी की प्रकृति : देश के विभिन्न हिस्सों में अलग-अलग प्रकार की मिट्टियां (उपजाऊ व गैर उपजाऊ या कम उपजाऊ)
इस के अतिरिक्त फसल बोने से मिट्टी की अम्ल शक्ति कम हो जाती है।

(5) मानवीय कारण : (i) रूढ़िवादी खेती प्रथा और रीति-रीवाज (iv) शिक्षा की कमी.
(ii) नई कृषि तकनीकों से अनभिज्ञता
(iii) भारतीय किसानों का भाग्यवादी दृष्टिकोण.

(6) संस्थागत कारण : (i) कृषि साख की कमी (iii) कृषि उत्पाद का पर्याप्त समर्थन मूल्य नहीं
(ii) कृषि उत्पाद हेतु बाजार का अभाव (iv) नौकरशाहों का उपेक्षापूर्ण व्यवहार
(v) सरकार एवं राजनीतिज्ञों का " "

भारतीय कृषि की उत्पादकता में सुधार हेतु निम्नलिखित मजबूत कदम उठाये गए हैं :

(1) नयी राष्ट्रीय कृषि नीति : बाढ़, सूखा, अतिवृष्टि एवं अनावृष्टि सहित अन्य प्राकृतिक आपदाओं से हुई क्षति के राहत प्राप्ति हेतु शुरू की गई 'प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना'

(2) हाल ही सरकार द्वारा जारी की गयी मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना, इसमें मिट्टी की जांच के बाद फसल बुआई, खाद एवं अन्य संसाधनों का प्रयोग

(3) किसानों की साख सुविधा हेतु 'राष्ट्रीय कृषि विकास योजना', 'किसान विकास पत्र', इत्यादि का प्रारंभ किया गया है।

(4) e-NAM : कृषकों को कृषि उत्पादों के समुचित और एकीकृत मूल्य प्रदान करने के लिए 'ई-नाम' (e-NAM) की शुरुआत की गई है।

(5) अन्य सुविधाएँ : (i) जैविक खेती को बढ़ावा देना,
(ii) किसानों के लिए पर्याप्त सिंचाई व्यवस्था का प्रयास,
(iii) भूमि की चकबंदी पर जोर
(iv) नकदी फसल उत्पादन के लिए कृषकों को आकर्षण,
(v) नयी तकनीक से खेती-बाड़ी का प्रयास
(vi) जलवायु के अनुकूल फसल की बुआई
(vii) असिंचित कृषि क्षेत्रों में कम पानी या बिना पानी वाले फसलों की बुआई
(viii) किसानों को आधुनिक या नयी तकनीक से खेती-बाड़ी हेतु प्रशिक्षण,
(ix) मनरेगा के माध्यम से तालाब, आहर पैन की व्यवस्था।

उपरोक्त विश्लेषण से भारतीय कृषि उत्पादकता, कृषि उत्पादता कम होने के कारण एवं उसे दूर करने के उपाय की विशद विवेचना किया गया है।

अगले कक्षा में कृषि उत्पादन के क्षेत्र में "हरित क्रान्ति" की चर्चा की जाएगी।